इकाई 26 दक्खन और दक्षिण भारत में क्षेत्रीय शक्तियाँ

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम तेरहवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक दक्षिण भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- दक्षिण भारत की राजनैतिक व्यवस्था के विषय में जान सकेंगे,
- दक्षिण भारत के राज्यों के आपसी संघर्ष की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- दक्षिण भारतीय राज्यों और दिल्ली सल्तनत के संबंधों के विषय में जान सकेंगे,
- इनके प्रशासन और अर्थव्यवस्था को समझ सकेंगे, तथा
- दक्षिण में नये राज्यों के उदय की प्रक्रिया समझ सकेंगे।

26.1 प्रस्तावना

खंड 3 में हम भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र में तेरहवीं शताब्दी तक प्रचलित राज्य व्यवस्था, समाज और अर्थव्यवस्था की चर्चा कर चुके हैं। अब हम इसके बाद के काल के दक्षिण भारतीय इतिहास का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन में दक्षिण भारत से अभिप्राय विन्ध्य पर्वत श्रृंखला के समस्त दक्षिणी क्षेत्र से हैं। इसमें दक्खन और प्रायद्वीपीय दक्षिण सम्मिलित हैं। इकाई 11 व 12 में इस क्षेत्र की प्राकृतिक भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जा चुका है इसलिये हम पुनः इसकी चर्चा नहीं करेंगे।

तेरहवीं शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक के दक्षिण भारतीय इतिहास में दो चरण बहुत स्पष्ट हैं :

i) तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभिक घटनाक्रम में चोल और चालुक्य राज्यों का विघटन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इन राज्यों के अवशेषों से चार स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आये। इनमें से पांड्य और होयसल राज्य इस क्षेत्र के दक्षिण में स्थित थे तथा काकतीय और यादव राज्य उत्तरी क्षेत्र में स्थित थे। यह राज्य लगभग सौ वर्ष तक अस्तित्व में बने रहे।

ii) दूसरे चरण का प्रारंभ चौदहवीं शताब्दी के दूसरे चतुर्थांश से (1325 से 1350 के मध्य) माना जा सकता है। इस समय इस क्षेत्र में विजयनगर और बहमनी नामक दो शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ। लगभग अगले दो सौ साल तक यह दोनों राज्य लगभग सम्पूर्ण दक्षिण में अपना प्रभुत्व बनाए रहे।

प्रथम चरण के काल में हम चारों राज्यों के इतिहास, उनके आपसी संबंधों, उनकी राज्य व्यवस्था, समाज और अर्थव्यवस्था का अध्ययन करेंगे। दूसरे चरण में हम इन राज्यों के दिल्ली सल्तनत के साथ संबंधों का अध्ययन करेंगे।

26.2 चार प्रमुख राज्य

चोल और चालुक्य राज्यों के विघटन के परिणामस्वरूप दक्षिण में अनेक छोटे-छोटे राजतंत्रो और राज्यों का उदय हुआ। इनमें प्रमुख चार राज्य निम्नलिखित थे :

i) यादव
ii) काकतीय
iii) पांड्य
iv) होयसल

26.2.1 यादव और काकतीय

तेरहवीं शताब्दी में यादव और काकतीय राज्यों ने एक बड़े क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह क्षेत्र आधुनिक आंध्र प्रदेश और लगभग सम्पूर्ण दक्खन तक फैला हुआ था।

यादव

लगभग नवीं शताब्दी ई. से हमें यादव वंश के इतिहास के विषय में जानकारी उपलब्ध है। लगभग 300 वर्षों तक यह वंश राष्ट्रकूट और चालुक्य राज्यों के सामन्त के रूप में शासन करता रहा। चालुक्यों के पतन के बाद वे एक बड़े क्षेत्र में स्वतंत्र शासक के रूप में अस्तित्व में आए।

इस वंश के भील्लमा V ने जो चालुक्य शासक सोमेश्वर IV का सामंत था, 1187 ई. में स्वतंत्र स्थिति प्राप्त की और यादव वंश की नींव डाली। सिंहन के शासन काल (1210-46 ई.) में यादव राज्य की सीमाओं में दक्षिणी गुजरात, पश्चिमी मध्य प्रदेश और बरार, महाराष्ट्र के कुछ भाग, कर्नाटक, आधुनिक हैदराबाद के पश्चिमी भाग और मैसूर के उत्तरी क्षेत्र सम्मिलित थे। कृष्ण (1246-60 ई.) तथा रामचन्द्र (1271-1311 ई.) यादव वंश के अन्य महत्वपूर्ण राजा थे। 1311-12 में राजा रामचंद्र की मृत्यु के बाद यादव वंश का अन्त हो गया।

काकतीय

काकतीय कल्यानी के चालुक्यों के सामन्त थे। लगभग 1162 ई. में काकतीय रुद्रदेव (प्रताप रुद्रदेव I), ने चालुक्य शासक तैलपा III को पराजित करके काकतीय वंश की नींव डाली। लगभग 1185 ई. में वेलनन्ती राजाओं को पराजित करके उसने कुरनूल जिला प्राप्त किया। गणपति (1199-1262 ई.), रुद्रम्बे (1262-95) तथा प्रताप रुद्र II (1295-1326) इस वंश के अन्य महत्वपूर्ण शासक थे। उनका शासन आन्ध्र के अधिकांश क्षेत्र गोदावरी, कांची, कुरनूल तथा कुडप्पा जिलों तक था। उलुग खां (मौहम्मद तुगलक) ने 1322 में लगभग सम्पूर्ण तेलंगाना को रौंद डाला और इस प्रकार काकतीय वंश का अंत हो गया।

26.6.2 पांड्य और होयसल

यह दोनों राज्य दक्खन के आगे के क्षेत्र—सम्पूर्ण प्रायद्वीपीय दक्षिण—पर नियंत्रण बनाए हुए थे।

होयसल वंश

होयसल वंश का शासन आधुनिक कर्नाटक और तमिल क्षेत्र के अधिकांश भागों में फैला हुआ था। इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक बल्लाल II (1173-1220 ई.) था। 12वीं शताब्दी के अंत में स्वतंत्र राज्य के रूप में होयसल राज्य अस्तित्व में आया। 14वीं शताब्दी

के प्रारंभ में इस राज्य का अंत हुआ। नरसिंह II (1234-63 ई.), नरसिंह III (1263-91 ई.) तथा बल्लाल III (1291-1342 ई.) जैसे प्रमुख होयसल शासकों ने पांड्य और यादव शासकों के विरुद्ध संघर्ष किए।

पांड्य वंश

पांड्य शासन में आधुनिक तमिलनाडु के कुछ भाग और आधुनिक केरल का लगभग सम्पूर्ण भाग शामिल था। तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में स्वतंत्र राज्य के रूप में पांड्य राज्य अस्तित्व में आया। चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में इस राज्य का अन्त हुआ। इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक मरवर्मन सुंदर पांड्य I (1216-1238 ई.) था। मरवर्मन सुंदर पांड्य II (1238-51 ई.), जटावर्मन सुंदर पांड्य I (1251-68), मरवर्मन कुलशेखर पांड्य (1268-1310 ई.) तथा जटावर्मन वीर पांड्य II इस वंश के अन्य महत्वपूर्ण शासक थे।

26.2.3 चार राज्यों के मध्य संघर्ष

इस सम्पूर्ण काल गें यह चारों राज्य एक दूसरे के विरुद्ध किसी न किसी युद्ध में उलझे रहते थे। यहाँ इन युद्धों की विस्तृत चर्चा के स्थान पर हम बहुत संक्षेप में इन युद्धों की प्रकृति की चर्चा करेंगे :

- काकतीय, होयसल और पांड्य राज्यों के बीच चोल राज्य के अवशेषों पर नियंत्रण के लिए लगातार संघर्ष रहता था।
- यादव और काकतीय वंश के बीच भी लगातार युद्ध चलता रहता था परन्तु कोई भी दूसरे को निर्णायक रूप से पराजित नहीं कर पाया।
- इसी प्रकार के संघर्ष यादव, होयसल, काकतीय तथा पांड्य राज्यों के बीच में भी थे।
- इन राज्यों के आपसी संघर्षों के अतिरिक्त कई अन्य युद्ध भी हुए। दक्षिण भारत के चार अत्यधिक महत्वपूर्ण आक्रमण यादव और पांड्य शासकों ने किए। यादव वंश के संस्थापक भील्लमा V ने मालवा और गुजरात पर आक्रमण किए। सिंहन और रामचन्द्र जैसे यादव शासकों ने भी मालवा (1215 ई.) और गुजरात पर आक्रमण किए परन्तु कोई निश्चित सफलता नहीं मिली।
- पांड्य शासक मरवर्मन कुलशेखर ने लंका के विरुद्ध आक्रमण किया (1283-1302 ई.)। लंका के राजा पराक्रमबहा III (1302-1310) ने पांड्य राजा के समक्ष समर्पण कर दिया। इसके पश्चात् दोनों के बीच शांति बनी रही।

26.3 दक्षिणी राज्य और दिल्ली सल्तनत

13वीं शताब्दी के अन्त तक उत्तर भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद दिल्ली सुल्तानों ने 14वीं सदी के प्रारंभ में दक्षिण की ओर दृष्टि डाली।

इकाई 15 में आप खलजी और तुगलक वंशों के अधीन दक्षिण और दक्खन में सल्तनत के विस्तार का विस्तृत अध्ययन कर चुके हैं। यहाँ हमारे अध्ययन का प्रमुख केंद्र बिंदु दिल्ली सुल्तानों की विस्तारवादी नीति और दक्खन की राजनीति पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना है। दक्षिण के राज्यों के सल्तनत से संबंधों का अध्ययन हम दो चरणों में करेंगे :

i) अलाउद्दीन खलजी के शासनकाल में,
ii) अलाउद्दीन की मृत्यु के समय से मौहम्मद तुगलक के शासन के अन्त तक।

26.3.1 प्रथम चरण : अलाउद्दीन खलजी का दक्षिण आक्रमण

जलालउद्दीन खलजी के शासनकाल (1290-96 ई.) में उसके भतीजे अलाउद्दीन ने यादव राज्य की राजधानी देवगिरि पर आक्रमण किया। यादव शासक राजा रामचन्द्र पराजित हुआ और अलाउद्दीन ने भारी लूट प्राप्त की। राजा रामचन्द्र ने प्रत्येक वर्ष एक बड़ी राशि भेंट स्वरूप देने का प्रण किया। इसके बाद लगभग 10 वर्ष तक दिल्ली सल्तनत की ओर से दक्षिण पर कोई आक्रमण नहीं हुआ। अलाउद्दीन के सत्ता ग्रहण करने के पश्चात् दक्षिण पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए एक निश्चित योजना बनाई गई। 1306 से 1312 तक आक्रमणों की एक श्रृंखला के बाद दक्षिण के चारों प्रमुख राज्य पूर्णतया पराजित किए जा सके।

i) देवगिरि

अलाउद्दीन ने 1306-07 में अपने विश्वसनीय सेनानायक मलिक काफूर को दक्षिण आक्रमण के लिए नियुक्त किया। आक्रमण का तात्कालिक कारण यादव राजा रामचन्द्र द्वारा वार्षिक भेंट राशि देना बन्द करना था। राजा पुनः पराजित हुआ और काफूर राजा को बन्दी बना कर दिल्ली ले आया। राजा ने सुल्तान को वार्षिक भेंट राशि देने का वायदा किया। सुल्तान ने उसको राज्य वापस करके उसे पुनः राजा के पद पर स्थापित किया।

ii) वारंगल

मलिक काफूर ने 1309 में काकतीय राजधानी वारंगल पर आक्रमण किया। अलाउद्दीन का प्रमुख उद्देश्य काकतीय राजा को पराजित करना था। इतिहासकार बर्नी सुल्तान द्वारा काफूर को दिए गए निर्देशों का निम्नलिखित शब्दों में वर्णन करता है :

> ''तुम एक दूरस्थ देश में जा रहे हो, वहाँ अधिक दिन नहीं रुकना। तुम अपना पूरा ध्यान वारंगल को जीतने और राजा रुद्रदेव को पराजित करने पर केन्द्रित करना। अगर राजा अपना खजाना, हाथी और घोड़े तुम्हें देने को तैयार हो जाए और भविष्य में वार्षिक भेंट राशि देने का वायदा करे तो यह व्यवस्था स्वीकार कर लेना।''

आक्रमण में पराजित होने के बाद राजा ने अपना खज़ाना काफूर को सौंप दिया और वार्षिक भेंट राशि देने का वायदा किया।

iii) द्वारसमुद्र

अगला आक्रमण होयसल राज्य की राजधानी द्वारसमुद्र पर हुआ (1310-11)। वहाँ के शासक बल्लाल देव ने मामूली संघर्ष के बाद समर्पण कर दिया। अन्य दोनों दक्षिणी राज्यों की भांति होयसल राज्य से युद्ध संधि हो गई।

iv) मदुरा

मदुरा में राज्य पर नियंत्रण करने के लिए दो भाइयों सुंदर पांड्य और वीर पांड्य के बीच आपसी संघर्ष चल रहा था। इस संघर्ष का लाभ उठाकर काफूर ने उस पर आक्रमण किया। वीर पांड्य ने सुंदर पांड्य को पराजित करके राज्य से निकाल दिया और सिंहासन पर अधिकार कर लिया। सुंदर पांड्य ने अलाउद्दीन खलजी से मदद मांगी। होयसल राज्य को पराजित करने के बाद मलिक काफूर मदुरा पहुंचा और वीर पांड्य को पराजित कर लूट में भारी धनराशि प्राप्त की।

मलिक काफूर ने 1312 में यादव राजधानी पर पुनः आक्रमण किया। आक्रमण का प्रमुख कारण यह था कि राजा राम देव की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शंकर देव ने दिल्ली सुल्तान को भेंट राशि देना बंद कर दिया था। शंकर देव पराजित हुआ और कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदी के बीच के सम्पूर्ण क्षेत्र पर काफूर ने अधिकार कर लिया। जब अलाउद्दीन ने काफूर को दिल्ली वापस बुलाया तो वह दक्षिण के विजित क्षेत्र आइन उलमुल्क को सौंपकर चला गया।

आइये हम अलाउद्दीन की दक्षिण नीति की प्रमुख विशेषताओं पर ध्यान दें :

- लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत बिना किसी विशेष प्रतिरोध के जीत लिया गया।
- अलाउद्दीन दक्षिण भारत को अपने राज्य में सम्मिलित करने के पक्ष में नहीं था क्योंकि दिल्ली से इस दूरस्थ क्षेत्र पर नियंत्रण रखना मुश्किल था। दक्षिण राज्यों को परास्त करने के बाद उन पर दबाव डाला गया कि वे दिल्ली सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर लें और निश्चित धन वार्षिक भेंट के रूप में दिल्ली सुल्तान को भेजें। वहां के राजवंशों को हटाने का कोई प्रयास नहीं किया गया।
- आर्थिक रूप से दक्षिण भारत की विजयों से दिल्ली सुल्तानों को काफी लाभ हुआ और भारी धन राशि प्राप्त हुई।

26.3.2 द्वितीय चरण

अलाउद्दीन खलजी की मृत्यु के बाद दक्षिण के राज्यों ने दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और वार्षिक भेंट राशि देना भी बंद कर दिया। परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत की ओर से दक्षिण पर आक्रमण का नया क्रम शुरू हुआ। साथ ही सल्तनत की दक्षिण नीति में भी परिवर्तन आया।

अलाउद्दीन ने अपने अन्तिम दिनों में दक्षिण के राज्यों का उत्तरदायित्व मलिक काफूर को सौंप दिया था। उसकी मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी मुबारक खलजी (1316-1320) ने

देवगिरि पर आक्रमण किया और विशाल क्षेत्र अपने राज्य में मिला लिया। सुल्तान ने वहाँ अपने अधिकारी नियुक्त किए। इन अधिकारियों को भू-क्षेत्र (**इक्ता**) प्रदान किए गए। इन अधिकारियों को **सादा अमीर** अथवा 100 के सेनानायक कहा गया। इन **अमीरों** का कार्य अपने क्षेत्र से भू-राजस्व वसूल करना और शांति व्यवस्था बनाए रखना था। साथ ही उसने इन **अमीरों** को वारंगल पर आक्रमण करने का आदेश दिया। वारंगल का राजा प्रताप रुद्र देव पराजित हुआ और उसके राज्य के कुछ क्षेत्र भी सल्तनत में सम्मिलित कर लिए गए।

मुबारक खलजी की मृत्यु के बाद वारंगल ने पुनः वार्षिक भेंट राशि देना बंद कर दिया। नए सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक ने अपने पुत्र उलुग खां (मौहम्मद तुगलक) के नेतृत्व में एक विशाल सेना तेलंगाना पर आक्रमण करने भेजी। कुछ प्रारंभिक असफलताओं के बाद उलुग खां वारंगल के राजा प्रताप रुद्र देव को पराजित करने में सफल हुआ। अब तेलंगाना का सम्पूर्ण क्षेत्र दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया। उलुग खां ने इस सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रशासनिक इकाईयों में बांट दिया और **सादा अमीरों** के नियंत्रण में दे दिया। ये अमीर सल्तनत के प्रति प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी थे। माबार भी 1323 में विजित किया गया। शरीफ जलालउद्दीन इसका गवर्नर नियुक्त किया गया और मदुरा उसका प्रशासनिक केंद्र। अब उलुग खां सुल्तान बना और मौहम्मद तुगलक की उपाधि धारण की। उसने यह देखा कि उसके राज्य के दक्षिणी क्षेत्रों की प्रशासनिक व्यवस्था अकुशल है अतः उसने दक्षिण में देवगिरि को दूसरी राजधानी के रूप में विकसित करने का निर्णय किया (1327-28)। देवगिरि का नाम दौलताबाद रखा गया। बड़ी संख्या में अमीरों, व्यापारियों, विद्वान व्यक्तियों तथा अन्य जनमानस को दौलताबाद में बसने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस तरह हम देखते हैं कि मौहम्मद तुगलक की दक्षिण नीति खलजी से बिल्कुल अलग थी। तुगलक ने दक्षिण के बड़े भाग को अपने राज्य में मिलाकर वहाँ सल्तनत के ढाँचे पर भू-राजस्व व्यवस्था और प्रशासन लागू किया।

बोध प्रश्न 1

1) चोल और चालुक्य साम्राज्यों के अवशेषों पर बनने वाले नए राज्यों के नाम और उनके क्षेत्रीय विस्तार बताइए।

....

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित कथनों पर सही (✓) अथवा गलत (×) का निशान लगाइए।
   i) पांड्यों के सामन्त यादव थे।
   ii प्रताप रुद्र I काकतीय राज्य का संस्थापक था।
   iii) आधुनिक आंध्र प्रदेश के अधिकांश भाग पांड्य राज्य में थे।
3) अलाउद्दीन खलजी की दक्षिण नीति में तुगलकों द्वारा क्या परिवर्तन किए गए। लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

26.4 प्रशासन और अर्थव्यवस्था

इस क्षेत्र के तेरहवीं शताब्दी के अंत तक के प्रशासनिक ढांचे और आर्थिक व्यवस्था की चर्चा हम खंड 3 की इकाई 11 व 12 में कर चुके हैं। अधिकांश प्रशासनिक संस्थायें और आर्थिक

गतिविधियाँ इस काल में भी पूर्ववत जारी रहीं। अधिकतर महत्वपूर्ण परिवर्तन बहमनी राज्य और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् ही दिखाई पड़ते हैं। इनकी चर्चा हम इकाई 27 व 28 में करेंगे। यहाँ इस इकाई में हम आर्थिक व प्रशासनिक क्षेत्र के उन छोटे-छोटे परिवर्तनों की चर्चा करेंगे जो चार दक्षिणी राज्यों की स्थापना के बाद इनमें दिखाई पड़ते हैं।

26.4.1 प्रशासन

इन राज्यों की प्रमुख राजनीतिक संस्था राजतंत्र थी। इसके साथ ही सामन्ती व्यवस्था भी सामान्यतया प्रचलित थी। दक्खन के क्षेत्र में (यादव व काकतीय राज्यों में) प्रान्तीय प्रमुखों के रूप में सफल सैनिक अधिकारियों को नियुक्त किया जाता था जिन्हें **नायक** कहा जाता था। यह **नायक** छोटे स्तर के सामन्तों पर नियंत्रण रखने, भू-राजस्व वसूल करने और कानून व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करते थे। एक स्रोत के अनुसार राजा सामन्तों और **नायकों** को केवल छोटे गांव अनुदान में देते थे। बड़े गांवों की आय सेना के रख-रखाव के लिए अलग रखी जाती थी। काकतीय राजा **नायकों** की बढ़ती शक्ति के प्रति हमेशा सशंकित रहते थे। वे **नायकों** को अधिक समय तक एक स्थान पर नहीं रहने देते थे ताकि वे स्थानीय स्तर पर अधिक शक्तिशाली न हो सकें। विजयनगर साम्राज्य की अत्यधिक महत्वपूर्ण **नायनकार** व्यवस्था संभवत: इसी समय प्रारंभ हुई थी।

राज्य के विभिन्न विभागों की देख-रेख के लिए कई मंत्री नियुक्त किए गए थे। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गांव थे। गांवों की प्रशासनिक व्यवस्था का उत्तरदायित्व एक ग्राम प्रमुख के नेतृत्व में ग्राम पंचायत पर था। गांवों के समूह भी एक प्रशासनिक इकाई में संघठित किए जाते थे (काकतीय राज्य में इन्हें **स्थल** कहा जाता था तथा **स्थल** के समूह **नाडु** कहलाते थे)। विभिन्न राज्यों में यह प्रशासनिक इकाईयाँ और इनके प्रमुख भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते थे। **ब्रह्मदेय** व्यवस्था इस काल में भी जारी रही तथा प्रशासन और अर्थव्यवस्था में मंदिरों की भूमिका भी पूर्ववत बनी रही।

26.4.2 अर्थव्यवस्था

इस काल में भी कृषि उत्पादनों से प्राप्त कर राज्य की आय का मुख्य साधन था। राज्य द्वारा लगातार अधिक से अधिक भूमि को कृषि के अधीन लाने का प्रयास किया जाता था। सिंचाई के लिए तालाब (जिन्हें काकतीय राज्य में **समुद्रम** कहा जाता था) और बांध बनाए जाते थे। राज्य द्वारा निर्धारित भू-राजस्व की दर के विषय में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। दौलताबाद में दिल्ली सल्तनत का नियंत्रण स्थापित हो जाने के बाद भू-राजस्व व्यवस्था में कई नई व्यवस्थाएं लागू की गई (देखें इकाई 28)। चरागाहों, खानों और जंगलों पर राज्य का स्वामित्व था और राज्य इनसे कर वसूल करता था। चुंगी से आय और व्यापार से प्राप्त कर राज्य की आय के अन्य साधन थे (इन्हें काकतीय राज्य में **सुन्कम** कहा जाता था)। काकतीय राज्य में गाड़ी (**बन्दी**), दास (**बनीसा**) और घोड़े रखने पर एक अलग कर वसूल किया जाता था। पांड्य राज्य मोती वाली सीपों के लिए प्रसिद्ध था। मार्कोपोलो ने भी इसके विषय में लिखा है। समुद्र से मोती निकालने वाले अपने लाभ का दस प्रतिशत राज्य को देते थे। अरब व्यापारियों तथा बाद के यूरोपीय व्यापारियों के आगमन के बाद दक्षिण भारत की व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आई। इन व्यापारिक गतिविधियों से प्राप्त आय के कारण दक्षिण भारत की समृद्धि काफी बढ़ गई। व्यापारी संघ (गिल्ड) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वे राज्य की कर नीति तथा अन्य आर्थिक नीतियां निर्धारित करने में मदद करते थे। सम्पूर्ण दक्षिण भारत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक समुदाय **चेट्टी** था।

26.5 स्वतंत्र राज्यों का उदय

जैसा कि पहले बताया जा चुका है चौदहवीं शताब्दी के द्वितीय चतुर्थांश में (1325-50) दक्षिण भारत में तीन स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ :

i) माबार
ii) बहमनी
iii) विजयनगर

इन राज्यों का उदय एक लंबी उथल-पुथल और अस्थिरता के काल के बाद हुआ। इन राज्यों के उदय में दक्षिण के राज्यों और दिल्ली सल्तनत के संपर्क का भी योगदान था। इकाई के इस

भाग में हम माबार के स्वतंत्र राज्य के उदय की चर्चा करेंगे। बहमनी और विजयनगर राज्यों के उदय का विश्लेषण हम इकाई 27 और 28 में करेंगे।

माबार

जैसा कि आपने ऊपर पढ़ा दिल्ली सल्तनत द्वारा 1323 में माबार विजय किया गया और शरीफ जलालउद्दीन एहसन इसका गवर्नर नियुक्त किया गया। कुछ वर्षों तक जलालउद्दीन दिल्ली सुल्तानों के प्रति वफादार बना रहा। परन्तु दिल्ली से दूरी और संचार संपर्क के साधनों की कमी का फायदा उठाकर 1333-34 में उसने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया और जलालउद्दीन एहसन शाह की उपाधि धारण की। इस समय तुगलक सुल्तान अपने राज्य के अन्य कई भागों की समस्याओं में उलझा हुआ था अतः माबार को वापस लेने के लिये कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया। यह राज्य लगभग चालीस वर्षों तक स्वतंत्र रह सका। अंततः 1378 में विजयनगर साम्राज्य ने इसे जीतकर अपने राज्य में मिला लिया और इसकी स्वतंत्रता का अंत कर दिया।

बोध प्रश्न 2

1) दक्षिण के राज्यों में **नायकों** की भूमिका का उल्लेख कीजिये।

....
....
....
....
....
....

2) दक्षिण के राज्यों की अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं क्या थीं?

....
....
....
....
....
....

26.6 सारांश

इस इकाई में हमने चोल और चालुक्य साम्राज्यों के पतन के बाद दक्खन और दक्षिण भारत की राजनैतिक व्यवस्था का अध्ययन किया। इस क्षेत्र में चार स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। ये थे—यादव, काकतीय, पांड्य और होयसल। लगभग सौ वर्षों तक इन राज्यों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहा। उसके बाद दिल्ली सल्तनत ने उन्हें परास्त कर दिया। दक्षिण में दिल्ली सल्तनत की विजय पताका फहराने में अलाउद्दीन खलजी के सेनानायक मलिक काफूर ने प्रमुख भूमिका निभाई परन्तु फिर भी इस काल में इन राज्यों की स्वायत्तता बनी रही। मौहम्मद तुगलक के शासनकाल में लगभग सम्पूर्ण दक्खन और प्रायद्वीपीय दक्षिण के कुछ भाग दिल्ली सल्तनत में मिला लिए गए। देवगिरि नामक महत्वपूर्ण शहर को सल्तनत की दूसरी राजधानी के रूप में विकसित किया गया परन्तु यह स्थिति अधिक समय तक जारी न रह सकी। मौहम्मद तुगलक के शासनकाल के दौरान नई राजनीतिक शक्तियां उभरी और तीन नए स्वतंत्र राज्यों माबार, बहमनी और विजयनगर का उदय हुआ। इनमें से अन्तिम दो लंबे समय तक बने रहे और दक्षिण भारतीय राजनीति का प्रमुख केंद्र रहे।

26.7 शब्दावली

ब्रह्मदेय : ब्राह्मणों को दिए जाने वाले धार्मिक भूमि अनुदान (खंड 1 देखें)
चेट्टी : दक्षिण भारत का एक प्रमुख व्यापारी समुदाय

26.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 26.2.1 व 26.2.2 देखें
2) i) × ii) ✓ iii) ×
3) उपभाग 26.3.1 व 26.3.2 देखें

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 26.4.1
2) देखें उपभाग 26.4.2